Ajay numer tha

संस्कृतप्रचारपुस्तकमाला सं. २३

# ललित-मङ्गलम्

[ वन्दना, प्रार्थना तथा मङ्गलाचरण के रूप में पढ़ने योग्य कतिपय विभिन्न छन्दों की सरस-लित कविताओं का मनोहर लघु-संकलन ]

P. 8,3



015,1x L6

> सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्याबय वा रा गा सो

367.

99V9 (4) 54071 015,12

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

# 015,1x

7781

यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त थि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

•		A State of	•	
	100			
i m	1	Card of		
A TOP OF		14. 1 m		
		3	\$ 15 GB	
	· ·			
			*	
	1 1			
	100			
b				

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangoti

१९८९ <sup>\\_</sup>4) ,सँगा 015,1x

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

# ललित-मङ्गलम्

वन्दना, प्रार्थना तथा मञ्जलाचरक के रूप में पढ़ने योग्य कतिपय विभिन्त छन्दों की सरस-लित कविताओं का मनोहर लघु संकलन ]

> संङ्करियता वासुदेव द्विवेदी शास्त्री [सम्पादकं—संस्कृतप्रचारपुरतकमाळा]

्रिक्त सार्वभीम संस्कृत प्रचार कार्याखय वा रा ण सी प्रकाशक—

## सार्वभीम संस्कृत प्रचार कार्यालय

डो॰ इदा११० <mark>होजकटोरा,</mark> वाराणकी

015,152

\*

संस्करण — द्वितीय संख्या. — एक हजार

मूल्य — एक रुपया

· winner	www.ananananana	
कि समझ स	वन वेद वेदाङ पुस्तकालय 🍪	5
~ 669	El 1. Day 3	5
्रागत क्रमङ	11991	3
दिनांक		3
~~~~~~	000 000	٥

मुद्रक । वीजनाथ प्रसाद कल्पना प्रेस, रामकटोरा रोड, वाराणसी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## विनम्र निवेदन

संस्कृत की किंवतायें पदों के लालित्य, छन्दों की विविधता एवं गेयता तथा यमक-अनुप्रासों की योजना के कारण संसार के काव्यसाहित्य में अद्वितीय हैं। इन तीनों गुणों में यदि एक-एक भी गुण हो तो संस्कृत की किंवता विशेष आनन्द-दायिनी होती है फिर यदि इन तीनों गुणों का एकत्र मिलन हो जाय तो उसकी मनोहरता के सम्बन्ध में क्या कहना!

बहुत दिनों से मेरी यह इच्छा थी कि संस्कृत की ऐसी ही कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित किया जाय जिन में भावसीष्ठव के साथ उपर्युक्त गुणों का भी सुन्दर समन्वय हो। तदनुसार ही इस पुस्तक का सम्पादन तथा प्रकाशन कुछ वर्ष पूर्व किया गया था जिसका कुछ परिवर्धन के साथ माज पुन: प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में इलोकों का संग्रह देवताओं के अनुसार किया गया था पर इस संस्करण में छन्दों के अनुसार किया गया है। अर्थात प्रथम संस्करण देवप्रधान था तो यह संस्करण छन्दप्रधान हो गया है। इस परिवर्तन का उद्देश्य संस्कृत के विद्यायियों, प्रेमियों ग्रोर सर्वसाधारण संगीतज्ञों को देववन्दना के साथ संस्कृत के खन्दों का ज्ञान करावा तथा उन्हें इनोकों को सुन्दर स्वर में, ग्रीर यदि संभव हो तो हन के संगोत के पुट के साथ, पढ़ने का अभ्यास कर स्वयं आनन्द प्राप्त करने तथा दूसरों को भी आनन्दित करने की ग्रोर प्रेरित करना है। क्योंकि जब कोई पाठक या गायक किसी एक खन्द के अनेक क्लोकों को एक साथ पढ़ता है तो उसे स्वरसावना में सरनता होतो है ग्रीर अपनी पाठशे नो में एक ह्वयता नावे में भी सहायता मिलती है।

इस प्रकार की लित कितायों के वृहत् संग्रह के श्रीगणेश प्रथवा मञ्जलाचरण के रूप में यह लघु पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। संस्कृत क छात्र, संगीतंप्रेमी सज्जन तथा भक्तगण इन कितायों को पढ़-पढ़ कर, गा-गा कर तथा सुना सुना कर ग्रानन्द एवं भक्तिलाम के साथ संस्कृत के प्रचार में भी सहायक हों यही सबसे विनम्न निवेदन है।

पौष समावास्या २०३३ वि॰ २१।१९।१९७६ ई॰

.विनीत क्रिजीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Name Hay Kumar Tha
Village + Pain - Malahi Sitamih

Old - 7507

अनुब्दुप्\*

#### श्रीकृष्णस्तुतिः

इन्दीवर-दल-श्यामम् इन्दिरानन्द-कन्दलम् । वन्दारु-जन-मन्दारं वन्देऽहं यदुनन्दनम् ॥ पुष्टिमार्गीय-स्तोत्र-रत्नाकरः

श्रीरामस्तुतिः

वन्दामहे महेशान--चण्ड-कोदण्ड-खण्डनम्। जानकी-हृदयानन्द--चन्दनं रघुनन्दनम्।।

सुमाषितप्रन्थः

श्रीशिवस्तुतिः

नमस्तुङ्ग-शिरष्वुम्बि-चन्द्र-चामर-चारवे । त्रैलोक्य-नगराऽऽरम्भ-मूल-स्तम्भाय-शम्भवे ॥

इर्षचरितम्

<sup>• #</sup> इस छुन्द के प्रत्येक चरण में ८ अखर होते हैं।

#### श्रीदुर्गास्तुतिः

ग्रमरी-कबरी-भार — भ्रमरी-मुखरीकृतम् । दूरीकरोतु दुरितं गौरी-चरणपङ्कजम् ॥ कुवल्यानन्दः

#### श्रीसरस्वतीस्तुतिः

शारदा शारदाम्भोज-वदना वदनाम्बुजे । सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधं सन्निधं क्रियात् ॥ तिद्व्यमव्ययं धाम सारस्वतमुपास्महे । यत्प्रसादात् प्रलीयन्ते मोहान्धतमसञ्ख्टाः ॥ सुभाषितप्रन्थः

#### श्रीविष्णुस्तुतिः

यदुवंशावतंसाय वृन्दावन-विहारिणे। संसार-सागरोत्तार-तरये हरये नमः॥ पद्मावस्त्री

#### श्रीगङ्गास्तुतिः

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारि-चरण-च्युतम्। त्रिपुरारि-शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥

गङ्गाष्ट्रकम्



### आर्याः

श्रीकृष्णस्तुतिः

गुगा-गगा-पारावारं सारं रमगाीयतावतां जगति ।

हारं मधुर-विहारं

वपुरनुवारं मनः स्थरतात्।।

श्रीकृष्णविख्दाविछः

कामादिष कमनीये नमनीये ब्रह्म-रुद्राद्यैः ।

निःसाधन-भजनीये भावतनौ मे मतिभूयात् ॥

श्रवलोकितमनुमोदित
मालिङ्गितमङ्गनाभिरभिरामैः ।

श्रिधवृन्दावन-कुञ्जं

मरकतपुञ्जं नमस्यामः ।।

<sup>॰</sup> इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में १२ मात्रायें दूसरे चरण में १८ मात्रायें तथा चतुर्य चरण में १५ मात्रायें, होती हैं।

अलकावृत-लसदिलके विरिचत-कस्तुरिका-तिलके। चपल-यशोदा-बाले शोभित-भाले मितर्मेऽस्तु।।

नवनीतिप्रयाष्ट्रकमू

दिव्य-धुनी-मकरन्दे
परिमल-परिभोग-सिच्चदानन्दे।
श्रीपति-पदारिवन्दे
भव-भय-खेद-चिछदे वन्दे।।

षट्पदीस्तोत्रम्

श्रीहनुमत्स्तुतिः

तरुणाऽरुण-मुखकमलं करुणारस-पूर-पूरिताऽपाङ्गम्।

संजीवनमाशासे

मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम्।।

श्रीसरस्वतीस्तुतिः

भ्रोङ्कार-पञ्जर-शुकीम् उपनिषदुद्यान-केलि-कलकण्ठीम् । श्रागम-विषिन-मयूरीम् श्रायीमन्तिवभावये गौरीम् ॥

दयमान-दीर्घं-नयनां देशिकरूपेगा दिशताऽभ्युदयाम् । वाम-कुच-निहित-वीगाां वरदां संगीतमातुकां बन्दे॥

श्यामिलय-सौकुमार्यां सौन्दर्याऽऽतन्द-सम्पदुन्मेषाम् । तरुणिम-करुणापूरां मद-जल-कल्लोल-लोचनां वन्दे ॥

सरिगमपधित-रतान्तां वीगा-सङ्क्रान्त-कान्तहस्तान्ताम् । श्रान्तां मृदुल-स्वान्तां कुच-भर-तान्तां नमामि शिवकान्ताम् ॥ नवरलस्तोत्रम्



वियोगिनी\*

श्रीदुर्गास्तुतिः

र्गामान्य स्टार्थ को सम्मान

( 4 )

खगदम्ब ! विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुगास्ति चेन्मयि । ग्रपराध-परम्परा-वृतं नहि माता समुपेक्षते सतम् ॥

अपराष्ट्रसमापनस्तोत्रम्

न धनं न जनं न सुन्दरीं
कवितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे
भवताद् भक्तिरहैतुकी त्विय।।
श्रीकृष्णस्तुतिः

ग्रिय नन्दतनूज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।

क्रुपया तव पादपङ्कज-स्थित-धूली-सदृशं विचिन्तय ॥

शिक्षाष्ट्रकम्

इस छंद के प्रथम तथा तृतीय चरण में १० तथा द्वितीय एवं चतुर्थं चरण में ११ अक्षर होते हैं। छक्षण—विषमे ससजा गुदः समे समरा छोऽय गुद्धवियोगिनी। श्रीकृष्णस्तुतिः रागान्ध-गोपीजन-वन्दिताभ्यां योगीन्द्र-भृङ्गेन्द्र-निवेशिताभ्याम् । आताम्प्र-पङ्को रुह-विभ्रशभ्यां स्वामिन् ! पदाभ्यामयमञ्जलिस्ते ॥ श्रीकृष्णकर्णामृतम्

श्रीशिवस्तुतिः सानन्दमानन्दवने वसन्तम् श्रानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् । वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ श्रीसरस्वतीस्तुतिः आशासु राशीभवदङ्गवल्ली--भासेव दासीकृत-दुग्ध-सिन्धुम् । मन्दिस्मतैनिन्दित-शारदेन्दुं वन्देऽर्रावन्दासन-सुन्दरि ! त्वाम् ॥

# इस छुन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं तथा विराम ५-६ पर होता है। लक्षण—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ । जिगो गः।

## उपेन्द्रवज्रा"

श्रीकृष्णस्तुतिः नगोपलीलोऽपि हि गोपलीलः कलापकेशोऽप्यकलाप-केशः। वने विहारोऽप्यवने विहारः स पातु गोपीजन-वल्सभो वः॥

#### उपजाति\*

श्रीकृष्णस्तुतिः ब्रह्मालवालं भुवनैक-पालं यशोविशालं शिशुपाल-कालम् । संसार-माया-मित-मोह-जालं बालं मुकुन्दं शिरसा नदामि ॥

बालमुकुन्दाष्टकम्

# इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं तथा विराम ५-६ पर होता है। छक्षण — उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लबी सा।

अ इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अखर होते हैं।

किरीट-केयूर-विभूषिताय ग्रैवेय-साला-मिए-रञ्जिताय । स्फुरच्चलत्-काञ्चत-कुण्डलाय वसोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ।।

गोपीजनवल्लभाष्टकम्

नवाम्बुदाऽनीक-धनोहराय
प्रफुल्ल-राजीव-विलोचनाय ।
वेगुस्वनेर् भोदित-गोकुलाय
नमोऽस्तु गोपी-जन-वल्लभाय ।।

गोपीजनवल्लभाष्टकम्

वृन्दारका यस्य भवन्ति भृङ्गा मन्दाकिची यन्मकरन्द-विन्दुः। तवारविन्दाक्ष पदारविन्दं वन्दे चतुवर्ग-चतुष्पदं तत्।।

मल्लिनायः

करारिवन्देन पदारिवन्दं मुखारिवन्दे विनिवेशयन्तम्। वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं ।।
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

वालमुकुन्दाष्टकम्

सरस्वतीस्तुतिः

कस्तूरिका-विन्दु-विराजि-भालाम् करे दघावां स्फटिकाक्षयालाम् । ग्रोष्ठ-प्रभा-निजित-सत्प्रवालाम् त्वां नौमि नित्यं शिरसाऽऽदिबालाम् ॥

हरिवंशकविः

शिव-पार्वतीस्तुतिः
मन्दार-माला-लुलितालकायै
कपाल-मालाङ्कित-शेखराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥



#### कामचारिणी\*

गोपिकागीतम्
जयित तेऽधिकं जन्मना व्रजः:
श्रयत इन्दिरा शश्वदित्र हि।
दियत दृश्यतां दिक्षु तावका—
स्त्विय धृत(सवस्त्वां विचिन्वते ॥

मधुरया गिरा बल्गुबाक्यया बुध-मनोज्ञया पुष्करेक्षण। विधिकरीरिमा वीर मुह्यती— रधर-सोधुनाऽऽप्याययस्व तः॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं
किविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवण-मञ्जलं श्रीमदाततं
भुवि गृगान्ति ते भूरिदा जवाः॥

—श्रीमद्भागवतम्

o to the little

<sup>\*</sup> इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं तथा विराम ६-५ पर होता है। छक्षण है-नरदछाश्च गः कामचारिणी।

## शिशुलीला\*

श्रीकृष्णस्तुतिः

श्रतसी-कुसुमोपमेय-कान्तिर् यमुना-कूल-कदम्ब-मध्य-वर्ती, नव-गोप-वधू विलास-शाली वनमाली वितनोतु मञ्जलं नः ॥

सरस्वतीस्तुतिः

शरणं करवाणि शर्मदं ते चरणं वाणि ! चराचरोपजीव्यम् । करुणामसृणेः कटाक्षपातेः कुरु मामम्ब ! कृतार्थ-सार्थवाहम् ।।

मल्लिनाथः

दिवि वा भुवि वा ममास्तु वासो नरके वा नरकान्तक प्रकामम्।

# इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में ११ तथा द्वितीय एवं चतुर्थं चरण गें १२ अक्षर होते हैं। लक्षण—प्रथमे ससजा गयुग्मयुक्ता शिशुलीला चरमे समी रजी चेत्। अवधीरित-शारदाऽरिवन्दौ
चरणौ ते मरऐ।ऽपि चिन्तयामि ॥

ग्रुकुन्दमालास्तोत्रम्

त्रनुशीलित-कुंजवाटिकायाम् जघनालम्बित-पीत-शाटिकायाम् । मुरली-कल-कूजिते रतायाः मम चेतोऽस्तु कदम्बदेवतायाम् ।

पद्याव ली

श्रमरी-मुख-सीधु-माधुरीणां लहरी काचन चातुरी कलानाम् । तरलीकुक्ते मनो मदीयं धुरलीनाद-परम्परा मुरारेः ॥

पद्यावली

THE OFFICE COURSE



श्रीकृष्णस्तुतिः

THE POST OF THE PERSON

( == )

क्षीर-सागर-तरङ्ग-शीकराऽऽ सार-तारिकत-चारु-मूर्तये। भोगि-भोग-शयनीय-शायिने

माधवाय मधु-विद्विषे तमः ॥

मुकुन्दमाला

नन्दनन्दन-पदारविन्दयोः

स्यन्दमान-मकरन्द-विन्दवः ।

सिन्धवः परम-सौख्य-सम्पदां

नन्दयन्तु हृदयं ममाऽनिशम् ॥

पद्यावली

श्रीगणेशस्तुतिः श्रन्तराय-तिमिरोपशान्तये शान्तपावनमचिन्त्यवैभवम् । तन्तरं वपुषि कुञ्जरं मुखे मन्महे किमपि तुन्दिलं महः ॥

मल्लिनाथः

<sup>\*</sup> इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं । लक्षण-रात् परैनरलगे रयोद्धता ।

कर्ण-लम्बत-कदम्ब-मञ्जरी-केशराऽक् ग्य-कपोल-मण्डलम् । निर्मलं निगम-वागगोचरं नीलिमानमवलोकयासहे ॥ श्रीकृष्णकर्णामृतम्

श्रीहन्नमत्स्तुतिः ग्राञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम् । पारिजाततरु-मूलवासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम् ।।

यत्र यत्र रघुनाथ-कीर्तनं
तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारि-परिपूर्ण-लोचनं
मार्शतं नमत राक्षसान्तकम् ।

ठी

वाल्मीकिरामायणम्

श्रीशिवस्तुति। इन्दुमीलिमिह कुन्द-सुन्दरं सुन्दरी-कलित-वामदेहकम्। द्धन्दिरातन-मिलिन्द-विन्दितं तौमि चिन्दिर-ललाट-लालसम्।। ईश्वरशतकम्

大

शालिनी#

श्रीकृष्णस्तुतिः

पुञ्जीभूतं प्रेम गोपाङ्गनानां

मूर्तीभूतं भागधेयं यदूनाम् ।

एकीभूतं गुप्तवित्तं श्रुतीनां

क्यामीभूतं ब्रह्म मे सन्निधत्ताम् ।।

श्रीरामस्तुतिः

माता रामो मत्पता रामचन्द्रः

स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।

सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः

श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्

वान्यं जाने नैव जाने न जाने।।

<sup>#</sup> इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं तथा विराम ४-७ पर होता हैं। छक्षण—मत्तौ गौ चेत् शालिनी वेदलोकैः।

#### स्वागता"

श्रीकृष्णस्तुतिः शातकुम्भ-रुचि-हारि-दुकूलः केकिचन्द्रक-विराजित-चूलः । नव्य-यौवन-लसद्-व्रजनारी-रञ्जनो जयति कुञ्जविहारी ।।

राग-मण्डल-विभूषित-वंशी— विश्वमेगा मदनोत्सव-शंसी। स्तूयमान-चरितः शुक-सारी-श्रोणिभिजयिति कुञ्जविहारी।

गौर-धातु-तिलकोज्ज्वल-भालः केलि-चञ्चलित-चम्पकमालः। ग्रद्रि-कन्दरगृहेष्वभिसारी सुभ्रुवां जयति कुञ्जविहारी।।

कुञ्जविद्दार्यष्टकम्

<sup>\*</sup> इस छुन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं। लक्षण-ब्स्वागता रनभगै गुर्रणा च।

## वंशस्थम्"

श्रीशिवस्तुतिः

जयन्ति बागासुर-मौलि-लालिता दशास्य-चूड़ामणि-चक्र-चुम्बिनः । सुरासुराधीश-शिखान्त-शायिनस् तमश्चिदस्त्र्यम्बक-पाद-पांसवः ।।

कादम्बरी

श्रीरामस्तुतिः

प्रसन्नता या न गताऽभिषेकतस् तथा न मम्ली वनवास-दुःखतः।

मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे

सदाऽस्तु सा मञ्जुल-मङ्गल-प्रदा ॥

**तुल्सीकृतरामायणम्** 

श्रणीयसे विश्वविधारिं नमो नमोऽन्तिकस्थाय दवीयसे नमः। श्रतीत्य वाचां मनसां च गोचरं स्थिताय ते तत्पतये नमो नमः॥

किरातार्जुनीयम्

# इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अखर होते हैं। तथा विराम ५-७ पर होता है। छक्षण-जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

#### स्रिग्निणी"

श्रच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् । श्रीघरं साधवं गोपिका - वल्लभं जानकी-नायकं रामचन्द्रं भजे ।।

श्रच्युतं केशवं सत्यभामा-धवं माधवं श्रीधरं राधिका—राधितम्। इन्दिरा - मन्दरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे।।

विष्णावे जिष्णावे शिक्क्षिते चिक्रिणे रुक्मिणी-रागिणे जानकी-जानये। वल्लवी-वल्लभायांचितायात्मने कंसविष्वंसिने वंशिने ते नमः॥

अन्युताष्ट्रकम्

राजते श्रीमती देवता भारती शारदेन्दु - प्रभा - विश्वमं बिश्वती । मञ्जु - मञ्जीर - सङ्कार - संचारिणी तार - मुकालता-हार-श्रृङ्गारिणी ॥ भारतीस्वनम

इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अखर होते हैं । लक्षण—
 रैश्चद्रिमियुँता खग्विणी संमता ।

## तोटकम्

चिकुरं बहुलं विरलं भ्रमरं
मृदुलं वचनं विपुलं नयनम् ।
ग्रघरं मधुरं वदनं ललितं
चपलं चरितं नु कदाऽनुभवे ॥

श्रीकृष्णकर्णामृतम्

श्रघरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्। हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं विलतं मधुरम्। चिलतं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।

मधुराष्ट्रकम्

# इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते हैं। लक्षण-नत तोटकमांव्यसकारयतम्।

#### **अजङ्गप्रयातम्**°

श्रीहरिस्तुतिः

जगज्जाल-पालं कचत् कण्ठ-मालं शरच्चन्द्र-भालं महादैत्य-कालम् । नभो-नील-कायं दुरावार-मायं सुपद्मा-सहायं भजेऽहं भजेऽहम् ।।

हरिस्तोत्रम्

श्रीशिवस्तुतिः

गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकाल-कालं गरोशाधिपालम् । जटाजूठ-भङ्गोत्तरङ्गैविशालं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥

शिवाष्ट्रकम्

इस छुन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते है तथा ६-६°पर विराम होता है लक्षण— मुजङ्गप्रयातं भवेद् यैश्चतुर्भिः ।

श्रीगणेशस्तुतिः

यतोऽनन्तशक्ते-रनन्ताइच जीवा यतो निगुंगादप्रमेया गुगास्ते। यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥

### पृष्पिताया\*

त्रिभुवन-भुवनाभिराम-कोशं सकल-कलङ्कहरं परं प्रकाशम् । ग्रशारण-शरणं शरण्यमीशं हरिमजमीश्वरमच्युतं प्रपद्ये ।।

कुवलय दल-नील-सन्निकाशं शरदमलाम्बर-कोटरोपमानम् ।

\* इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में १२ तथा द्वितीय एवं चतुर्थं चरण में १३ अक्षर होते हैं। छक्षण-अयुजिन युगरेफतो यकारो, युजि तु नजी जरगाश्च पुष्पितामा।

#### भ्रमर-तिमिर कज्जलाञ्जनाभं सरसिज-चक्र-गदाधरं प्रपद्ये ॥

योगवाशिष्ठम्

श्रीलक्ष्मीस्तुतिः

सरसिज-निलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुक-गन्ध-माल्य-शोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥
श्रीसुक्रम्

श्रगणितगुग्गमप्रमेयमाद्यं सकल-जगितस्थिति-संयमादि-हेतुम्। उपरम-परमं परात्म-भूतं सततमहं प्रग्गतोऽस्मि रामचन्द्रम्।।

त्रिभुवन-कमनीय-रूपमीडयं रवि-शत-भासुरमीहित-प्रदानम् । शरणदमनिशं सुरागमूले कृतनिलयं रघुनन्दनं प्रपद्ये ॥ पर-घन-पर-दार-वर्जितानां
पर-गुग्ग-भूति-सुतुष्ट-मानसानाम् ।
पर-हित-निरतात्मनां सुसेव्यं
रघुवरमम्बुज-लोचनं प्रपद्ये ।।
अध्यात्मरामायणम्

## द्रु तिवलिस्बतम्

श्रीकृष्णस्तुतिः
अधर-बिम्ब-विडम्बित-विद्रुमं
मधुर-वेग्गु-निनाद-विनोदितम्।
कमल-कोमल-कम्न-मुखाम्बुजं
कमपि गोपकुमारमुपास्महे॥

मदशिखण्ड-शिखण्ड-विभूषणं मदन-मन्थर-मुग्ध-मुखाम्बुजम् । व्रजवधू-नयनाञ्चल-वञ्चितं विजयतां मम वाङ्मय-जीवितम् ॥

श्रीकृष्णकर्णामृतम्

<sup>\*</sup> इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते हैं। लक्षण; "दुतविलम्बितमाह न मौ मरो"।

सकल-मङ्गल-वृद्धि-विधायिनी
सकल-सद्गुण-सन्तति-दायिनी।
सकल-मञ्ज्जल-सौख्य-विकाश्चिनी
हरतु मे दुरितानि सरस्वती।।
श्रीसरस्वतीस्तवः

## मञ्जुभाषिणी"

श्रीकृष्णस्तुतिः श्ररुणाधराऽमृत-विद्योषित-स्मितं वरुणालयानुगत-वर्ण-वैभवम् । तरुणारिवन्द-दल-दीर्घ-लोचनं करुणामयं कमपि बालमाश्रये ।।

करिगामलङ्क्ष्य-गति-वैभवं भजे करुणाऽवलम्बित-किशोर-विग्रहम् । यमिनामनारत \_ विहारि मानसे यमुना-वनान्त-रसिकं परं महः ॥

<sup>ं \*</sup> इस छुन्द के प्रत्येक चरण में १३ अक्षर होते हैं। लक्षण-सजसा जगौ च यदि मञ्जुमाषिणी।

पशुपाल बालपरिषद्-विभूषणं शिशुरेष शीतल-विलोल-लोचनः । मृदुल-स्मिताई-वदनेन्दु-सम्पदा मदयन् मदीयहृदयं विगाहते ।। श्रीकृष्णकर्णामृतम्

#### वसन्ततिलका\*

श्रीकृष्णस्तुतिः

बालाय नीलवपुषे नव-िर्काङ्कणीकः जालाभिराम-जघनाय दिगम्बराय । शादूँल-दिव्य-नख-भूषरा-भूषिताय नन्दात्मजाय नवनीतमुषे नमस्ते ।।

गोधूलि-धूसरित कोमल कु न्तलाग्रं गोवर्धनोद्धरण केलि कुत-प्रयासम् । गोपीजनस्य कुच-कुङ्कुम मुद्रिताङ्कं गोविन्दिमन्दुवदनं शरणं व्रजामः ॥

इस छन्द के प्रत्येक चरण में १४ अक्षर होते हैं । तथा
 पर विराम होता है । लक्षण – उक्ता वसन्ततिलका तमजा-जगौ गः ।

#### श्रीशिवस्तुतिः

गङ्गा-तरङ्ग-रमणीय-जटा-कलापं
गौरी-निरन्तर-विभूषित-वामभागम् ।
नारायणिप्रयमनङ्ग-मदापहारं
वाराणसीपुर-पति भज विश्वनाथम् ॥
विश्वनाथाष्टकम्

श्रीशिवस्तुतिः

श्रेयः प्रयच्छतु परं सुविशुद्धवर्णा पूर्णाभिलाष-विबुधाधिप-वन्दनीया । पुण्या कविप्रवरवाणिव बालचन्द्र-चूडामणेश्चरण्-रेणु-कणावली वः॥ स्वतिकुद्धमाञ्जलिः

श्रीदुर्गास्तुतिः

आनन्द-मन्थर-पुरन्दर-मुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु वो विजयाय मञ्जुमञ्जीर-सिञ्जित-मनोहरमम्बिकायाः।
कुवल्यानन्दः

#### श्रीगणेशस्तुतिः

भक्त्या नमित्त्रदशराज-िकरीट-कोटि-रत्नावली-िकरण-राजि-विराजमानम् । श्रीमत्करीन्द्रवदनस्य पदारिवन्द-द्वन्द्वं सदा जयित सिद्धिकरं नराणाम् ॥ भैषज्यस्नाविष्ट

#### श्रीशिवस्तुतिः

तस्मै नमः परम-कारग्-कारग्गय
दीप्तोज्ज्वल-ज्वलित-पिङ्गल-लोचनाय।
नागेन्द्रहार-कृत-कुण्डल-भूषग्गय
ब्रह्मेन्द्र-विष्णु-वरदाय नमः शिवाय।

#### श्रीकृष्णस्तुतिः

म्रार कदीर्ध-नयनो नयनाभिरामः
कन्दर्पं कोटि-ललितं वपुरादधानः ।
भूयात् स मेऽद्य हृदयाम्बुरुहाधिवर्ती
वन्दाटवी-नगर-नागर-चक्कवर्ती ।।
पद्यावर्षी

# मालिनी\*

श्रोकृष्णस्तुति:

नव-जलधर-वर्णं चम्पकोद्भासि-कर्णं विकसित-निलनास्यं विस्फुरन्-मन्द-हास्यम्। कनक-रुचि-दुकूलं चारु-बर्हाऽवचूलं कमपि निखिल-सारं नौमि गोपी-कुमारम्॥

मुख-जित-शरिदन्दुः केलि लावण्य-सिन्धुः
कर-विनिहत-कन्दुः वल्लवी-प्राग्ग-बन्धुः।
वपुरुपसृतरेगुः कक्ष-निक्षिप्त-वेगुः
वचन-वशग-धेनुः पातु मा वन्दसूनुः॥

ग्रक्कन्दसुक्राविष्टः

ग्रखिल भुवन सारं प्रेम सर्वस्व-भारं नव-मदन-विकारं सौख्य-सिन्धु-प्रचारम् ।

<sup>\*</sup> इस छुन्द के प्रत्येक चरण में १५ अक्षर होते हैं तथा -- ७ अक्षर पर विराम होता है। छक्षण--ननमयययुतेयं माळिनी भोगिळोकैः।

मधुर-रस-विहारं राधिका-कण्ठ-हारं
प्रग्रामत सुकुमारं श्रीयशोदाकुमारम्।।
सङ्गीतमाधवम्

कनक रुचि दुकूलश् चारु-बर्हाऽवचूलः सकल-ितगम-सारः कोऽपि लीलाऽवतारः। त्रिभुवन-सुखकारी शैलघारी मुरारिः परिकलित-रथाङ्को मङ्गलं नस्तनोतु।।

सजल-जलद-कालं प्रेम-वापी-मरालम् ग्रिभनव—वनमालं क्षेम-वल्ली-प्रवालम्। भुवन-निलन-नालं दानवानां करालं निखिल-मनुज पालं नौमि तं नन्दबालम्।

उद्भटसागरः

श्रीशिवस्तुतिः

शिशिर-किरण-धारी शैलबाला-विहारी भव-जलनिधि-तारी थोगि-हृत्पद्म-चारी। शमनज-भय-हारी प्रेतभूमि-प्रचारी कृपयतु मयि देव: कोऽपि संहारकारी ॥ उद्भयकारः

श्रीदुर्गास्तुतिः

श्वरणमिष सुराणां सिद्ध-विद्याघराणां मुनि-दनुज-नराणां व्याधिभिः पीडितानाम् । नृपति-गृह-गतानां दस्युभिर्वा वृतानाम् त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसोद ॥

#### पञ्चचासरम्\*

जटा-कटाह-सम्भ्रम-भ्रमन्तिलम्प-निर्झरी-विलोल-वीचि-वल्लरी-विराजमान-मूर्धवि । धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट-पह-पावके किशोर-चन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षर्णं सम ॥ श्रीशिवस्तुतिः

घराधरेन्द्र-निन्दिनी-विलासवन्ध्-वन्ध्ररः स्फुरिंद्गन्त-सन्तिति-प्रमोदमान-मानसे । कृपाकटाक्ष-धोरगी-निरुद्ध-दुर्धरापींद क्विचिद्द्गम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ श्वताण्डवस्तोत्रम्

श्रीकालिन्दीस्तुतिः मुरारि-काय-कालिमा-ललाय-वारि-धारिगी तृगीकृत-त्रिविष्टपा त्रिलोक-शोक-हारिगी । मनोनुकून-कूल- कुञ्ज - पुञ्ज - धूत - दुर्मदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ।। यमुनाष्टकम्

<sup>#</sup> इस छन्द के प्रत्येक चरण में १६ अक्षर होते हैं तथा द- अक्षर पर विराम होता हैं। लक्षण— जरी जरी ततो जगी च पञ्चचामरं वदेत्।

( ३३ )

श्रीकृष्णस्तुतिः

भजे व्रजैक-मण्डनं समस्त-पाप-खण्डनं स्त्र-भक्त-चित्त-रञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् । सुपिच्छ-गुच्छ-मालकं सुवाद-वेग्गु-हस्तकम् अनङ्ग-रङ्ग-सागरं नमामि कृष्ण-नागरम् ॥

मनोज - गर्व - मोचनं विद्याल - लोल - लोचनं विद्यूत-गोप-शोचनं नमामि पद्मलोचनम् । करारविन्द—भूधरं स्मिताऽवलोक—सुन्दरं महेन्द्र-मान-दारगं नमामि कृष्ण-वारग्रम् ॥ श्रीकृष्णाष्टकम्

### मन्दाकान्ता"

श्रीकृष्णस्तुति :

वृन्दारण्ये तपन-तनया-तीर-त्रानीर-कुञ्जे
गुञ्जन्मञ्जु-भ्रमर-पटली-काकली-केलि-भाजि ।
भ्राभीराणां मधुर-मुरली-नाद-सम्मोहितानां
मध्ये कोडन्नवतु सततं नन्दगोपालबालः ॥

मुग्धं स्निग्धं मधुर-मुरली-माधुरी-धीरतादैः
कारं कारं करणविवशं गोकुल-व्याकुलत्वम् ।
श्यामं कामं युवजन-मनो-मोहनं मोहनाङ्गं
चित्तो वित्यं निवसतु महे वल्लवी-वल्लभं नः ॥
श्रीकृष्णकर्णामृतम्

इस छन्द के प्रत्येक चरण में १७ अक्षर होते हैं तथा ४-६
 अक्षर पर विराम होता है । छक्षण--मन्दाकान्ताऽम्बुधि-रस-नगे मौं मनौ तौ गयुग्मम् ।

श्रीकृष्णस्तुतिः

जयत्यमल-कौस्तुभ - द्युति - विराजितोरःस्थलः सहेल-हत-दानवो नव-तमाल-नील-द्युतिः । विनश्च-सुर-मस्तक-च्युत-विकासि-पुष्पावली-विकीर्ण-मधु-सीकर-स्नपित -पादपीठो दरिः ॥ स्ततिक्रसमाङ्गि

स्मृतापि तरुणातपं करुणया हरन्ती नृणाम् श्रमङ्गुर—तनुत्विषां वलयिता शतैर्विद्युताम् । कलिन्द—गिरि—नन्दिनी तट-सुर-द्रुसालम्बिनी मदीय—मति-चुम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी ॥

विशाल-विषयाटवी-वलय—लग्न—दावानल-प्रसृत्वर—शिखावली —विकलितं मदीयं मनः। ग्रमन्द—मिलदान्दरे निखिल—माधुरी—मन्दिरे मुकुन्द-मुख-चन्दिरे चिरमिदं चकोरायताम्।। मामिनीविडासम्

# इस छुन्द के प्रत्येक चरण में १७ अक्षर होते हैं तथा द-१ पर विराम होता है। छक्षण-जसौ जसयछा वसुग्रहयिक्श पृथ्वी मवेत्। स्वहस्त-गिरिधारिगाः प्रचुर-वर्षणावारिगाो
महैन्द्र-मद-हारिणो व्रज-वसुन्धरा-धारिणः ।
गवादि-सुख-कारिणः स्वजन-शोक-सन्तारिगाः
सुरारि-कुल-मारिणश्चरणपङ्कजं चिन्तये ॥

नवीन-अलदाक्वितः सुख-समृह-सेवाक्वितः समस्त-मणि-भूषितः सुरिभ-चन्दनारूपितः । स्फुरन्मुरिलकाऽधरः स्वजन-मोहनैकाऽधरः सदा मदन-सुन्दरो व्रजपुरन्दरः स्मर्यताम् ॥

श्रीशिवस्तुतिः

जयत्यमर-दीघिका-सिलल-सेक-सम्वधित-प्रचण्ड-नयनानल-ग्लपित-तीव्र-ताप-व्यथः । ग्रचिन्त्य-चरितोज्ज्वल-ज्वलदनन्य-साधारण-प्रभाव-महिमाहित-त्रिभुवनोपकारो हरः ॥

ख्रतिकुसुमाञ्जिलः

श्रीसरस्वतीस्तुतिः करङ्गमित-पुस्तकी मधुर-वल्लकी-संगमा हशा जित-कुरङ्गमा कलितजङ्गमाजङ्गमा । अधिष्ठित-विहङ्गमा सकलशास्त-पारङ्गमा सदाऽस्तु हृदयङ्गमा वदन-पङ्कजे वाङ् मम।। अश्वशास्त्रम्

# शिखरिणी \*

श्रीकृष्णस्तुतिः

श्रपारे संसारे विषम-विषयारण्य-सरणौ मम भ्रामं भ्रामं विगलित-विरामं जडमतेः। परिश्रान्तस्यायं तरणि-तनया-तीर-निलयः समन्तात् सन्तापं हरि - नव - तसालस्तिरयतु॥ मामिनीविष्णसम्

श्रीसरस्वतीस्तुतिः

मधुस्यन्दी मन्दीकृत-विपदुपाधिर्भवमरु-भ्रमक्लेशावेश-प्रशम-कमनीयो विजयते। ग्रखण्ड-श्रीखण्ड-द्रव-नव-सुधासार-सरसः

> प्रसादो वाग्देव्याः प्रवरकाव-काव्यामृतवपुः ॥ स्तुतिकुसुमाञ्जालः

<sup>#</sup> इस छन्द के प्रत्येक चरण में १७ अक्षर होते हैं तथा ६-११ पर विराम होता है। लक्षण— रसै कट्रै शिछन्ना य म न स म ला गः शिखरिणी।

श्रीगौरीस्तुतिः

वहन्ती सिन्दूरं प्रबल-कवरी-भार-तिमिर-त्विषां वृन्दैर्वन्दीकृतिमव नवीनार्क-किरणम्।

तनोतु क्षेमं नस्तव वदन-सौन्दर्य-लहरो-परीव।ह-स्रोत: सरणिरिव सीमन्त-सरणिः।। सौन्दर्यछहरी

मुखे ते ताम्बूलं नयन-युगले कज्जल-कला ललाटे कश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता। स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथु-कटि-तटे हाटकमयी नमामि त्वां गौरीं चगपति-किशोरीमविरतम्।। सौन्दर्यल्डरी

श्रीजगन्नाथस्तुतिः

कदाचित् कालिन्दी-तट-विषिन-संगीत-तरलो मुदाभीरी-नारी-वदन-कमलाऽस्वाद-मधुपः। रमा-शम्भु-ब्रह्माऽमरपति-गरोशाचित-पदो जगन्नाथस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।

श्रीलक्ष्मीस्तुतिः

जगन्नाथाष्ट्रकम्

समीपे सङ्गीत-स्वर-मधुर-भङ्गी मृगहशां विदूरे दानान्ध-द्विरद-कलभोद्दाम-निनदः। बिहदूरि तेषां भवति हय-हेषा-कलकलो हिंगेषा ते येषामुपरि कमले ! देवि सदया ।।

हमीलहरी

श्रीगङ्गास्तुतिः निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदां प्रधानं तीर्थानाममलपरिधानं त्रिजगतः । समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियां श्रियामाधानं नः परिहरतु तापं तव वपुः ॥ गङ्गाळहरी

## कोकिलकम्

वेदस्तुतिः

जय जय जह्यजामजित दोष-गृभीत-गुणां त्वमसि यदात्मना समवरुद्ध-समस्त-भगः। ग्रग-जगदोकसामखिल-शक्त्यवबोधक ते क्वचिद्दजयाऽत्मना च चरतोऽनुचरेन्निगमः।।

<sup>\*</sup> इस छुन्द के प्रत्येक चरण में १८ अक्षर होते हैं तया ८-१० पर विराम होता है। छक्षण—यदि भवतो नजी भजजला गुरु कोकिछकम्।

# शादू बावकी डितम् "

श्रीकृष्णस्तुतिः

सान्द्रानन्द-पुरन्दरादि-दिविषद्-

वृन्दैरमन्दादरा—

दानम्बे मुं कुटेन्द्र—नीलमणिभिः

सन्दर्शितेन्दीवरम्।

स्दच्छन्दं मकरन्द—सुन्दर गलन्-

मन्दाकिनी\_मेदुरम्

श्रीगोविन्द-पदारविन्दमशुभ-

स्य न्दाय वन्दामहे ॥

गीतगोविन्दम्

केली-लोलमुदारनाद-मुरली-

नाली-विलीनाधरम्

धूली-धूमल-कान्ति -कुन्तल-भर-

व्यासङ्गि--पिञ्छाञ्चलम्।

\* इस छन्द के प्रत्येक चरण में १६ अक्षर होते है तथा १२-७ पर विराम होता है। लक्षण—सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शर्द्वलिकीडितम्। नालीकायत—लोचनं नव—धन— रयामं ववणिकिङ्किशी पाली—दन्तुर—पिङ्गलाम्बर—धरं—

गोपालबालं भजे।।

कृष्णाष्ट्रकम्

यत्रास्ते मघुपच्छलेन मनसः

श्रेणी वर्जेगीहशाम्

स्वच्छन्दं वनमालया परिचिता

पादारविन्दावधि ।

विद्युद्दाम-समाहृताञ्जन\_घन-

श्यामाऽभिरामद्युतिर्

मूर्तिः कापि कलापिनी स्फुरतु वः

स्वान्ते नितान्तोज्ज्वला ॥

श्रीगोविन्दरतिमंजरी

विस्फारा गिरिगोधने दिधपयः—

स्तेये रहोप्यस्थिरा

नन्दे सन्नमिताधरा व्रजवधू

श्रेण्यानते मन्थराः।

क्रूराः केशिनि मेदुराः सहचर-

व्यूहेऽधिगोष्ठान्तरं

गोविन्दस्य दिशन्तु वः शमतुलं

नानादिधा दृष्टयः ॥ श्रीकृष्णविरुदावली

श्रीशिवस्तुतिः

तारानायक—शेखराय जगदा—

धाराय धाराधर—

च्छायाघारक-कन्घराय गिरिजा

सङ्गैकशृङ्गारिणे।

नचा शेखारिए ह्या तिलाकिने

नारायणेतासिणे

नागै: कङ्कारिएने नगेन गृहिणे

नाथाय नित्यं चितः ॥

रसगङ्गाधरः

श्रीरामस्तुतिः

उत्फुल्लाऽमल—कोमलोत्पल—दल—

श्यामाय रामाय ते

कामाय प्रमदामनोहर—गुण—

ग्रामाय रायात्मने ।

योगारूढ-मुनीन्द्र-मानस-सरो-

हंसाय संसार—वि—

ध्वंसाय स्फुरदोजसे रघुकुलो-

त्तंसाय पुंसे तमः ॥ श्रीरामस्तवराजस्तोत्रम्

द्धाः सर्वार्थ-समागमस्य रसना-

रङ्ग स्थली-नर्तकी

तत्त्वालोकन-कज्जलघ्वज-शिखा

वैदग्ध्य-विश्रामभूः।

श्रृङ्गारादिरस-प्रसार-लहरी

स्वलींक-कल्लोलिनी

कल्पान्त\_रिंथर-कोति-सम्भ्रम-सखो

सा भारती पातु वः ॥

कीर्तिलता

#### स्रम्भरा"

एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणत—बहुफले

यः स्वयं कृत्तिवासाः

कान्ता-संमिश्र-देहोऽत्यविषयमनसां

यः पुरस्ताद् यतीनाम्।

श्रष्टाभियंस्य कुत्स्नं जगदिष तनुभिर्

विभ्रतो वाभिमानः

सन्मार्गालोकनाय व्यपनयतु स

वस्तामसीं वृत्तिमीशः॥

मालविकाग्निमत्रम्

श्रोसूर्यस्तुतिः

प्रालेयानां करालाः कवलित-जगती

मण्डल=ज्वान्तजालाः

त्रात-स्वलींकपाला विदलदरुणिम-

क्षिप्त-बाल-प्रवालाः।

# इस छन्द के प्रन्येक चरण में २१ अखर होते हैं तथा ७-७-७ पर निराम होता है। लक्षण--प्रभीर्यानां त्रयेण त्रिमुनि-यतियुता सम्बरा कीर्तितेयम्। विश्लिष्यत्—कोकवाला—ज्वर—हरण—भवत्— कोतिजालैर्जंटाला व्योम—व्याप्तौ विशालास्त्विय दघतु शिवं भास्त्रतो भानुमालाः ॥ सुघालहरी

# कुसुममञ्जरी \*

श्रीकृष्णस्तुतिः

केशपाश-घृत-पिञ्छका-वितति-सञ्चलन्मकर-ंकुण्डलम् हार-जाल-वनमालिका-लित-मङ्गराग-घन-सौरभम् । पीत-चेल-घृत-काञ्चिकाञ्चित-मृदश्चदंशु-मणि-नूपुरम् रासकेलि-परिभूषितं तव हि **७**पमीश ! कलयामहे ॥

\* इस छुन्द के प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं।

वेगु-नाद-कृत-तान-दान-कलगान-राग-गति-योजना-लोभनीय-मृदु-पाद-पात-कृत-ताल-मेलन-मनोहरम्।

पाणि-संक्वणित-कङ्कणं च मुहु-रश-लम्बित-कराम्बुजम् । श्रोणि-विम्ब-चलदम्बरं भजत रासकेलि-रस-डम्बरम् ॥ नारायणीयम्

## अश्वधाटी\*

श्रीदुर्गास्तुतिः वालीयुत-श्रवणपाली-युगा ललित-चूली-विराजि-वकुला केलीगताऽनुग-मराली--कुला मधुरमालीभिराहत-कथा।

अ इस छन्द के प्रत्येक चरण में २२ अक्षर होते हैं। लक्षण-शोमानि घानमिह छन्दोऽश्वघाटि खलु तो भी जजौ स र न गाः। नालीक—हक्—कुसुम-नालीक-पाणिरिह कालीयशासिसहजा तालीदलाभ-तनुमाली सदा भवतुकाली शुभाय मम सा ॥ अश्वषाटीकाव्यम्

अम्बाष्टकम्

श्रीनटराजस्तुतिः

सद्धिनतमुद्धिन्नत-निकु ज्नित\_पदाऽ-पित-झणंझिणत\_मञ्जु-कटकम् पतञ्जलि-हगञ्चनमचञ्चल-पदं
जनन-भञ्जनकरं गलरवम् ।
कदम्बरुचिमम्बरवसं परममम्बुद—
कदम्बक-विडम्बन-करम्
चिदम्बुधि-मिंग बुध-हृदम्बुज-रिवम्
वर-चिदम्बरनटं हृदि भजे ।।

हरि त्रिपुरभञ्जननन्त-कृत-कङ्कण्मखण्ड-दयमन्त-रहितम्
विरिश्चि-सुर-संहति-पुरन्दर-विचिन्तितपदं तरुण-चन्द्र-मुकुटम् ।
परम्परमखण्डितयमं भसित-मण्डिततनुं मदन-भञ्जव-करम्
चिरन्तनिममं प्रणत-सञ्चित-निधि
वर-चिदम्बरनटं हृदि भजे ॥

चिदम्बरस्तोत्रम्

कि सुरुष्ठ भवन वेद	वेदाङ पुस्तकालय 😝
श्रागत क्रमाक	1191
दिनाक	1.6
-0. Mumukshu Bhawan w	America Collection Digitized by eC

# **प**रिशिष्टम्

मुजङ्गप्रयातम्

ब्रह्मस्तुतिः नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय । नमोउद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय नमो ब्रह्मणे व्यापिन निगुणाग्रा त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं बरेण्यं त्वमेकं जगत्कारणं विश्वरूपम् त्वमेकं जगत्कर्त्-पात्-प्रहर्त् त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥ भयानां भयं भीषणं भीषणानां गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् । महोच्चै: पदानां नियन्त् त्वमेकं परेषां परं रक्षकं रक्षकाणाम् ॥ तदेकं स्मरामस्तदेकं भजाम-स्तदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः। तदेकं निधानं निरालम्बमीशं भवास्मोघि-पोतं शरण्यं व्रजामः ॥

महानिर्वाणसन्त्रम्

# संस्कृतप्रेमियों को सुस्वना

युंद्धभाप सरसता शीघ्रता एवं मनोरंजन के साथ घर बैठे संस्कृत सीखना चाहते हैं और अपने रिजल-बच्चों को भी सिखाना चाहते हैं तो निम्नलिखित पते से पुस्तकें तथा पोस्टर मेंगा कर अपनी अभिलाषा पूर्ण करें, यह विनम्न निवेदन है। क्रुपया सूचीपत्र के लिये ग्राज ही पत्र लिखें—

विनम्र निवेषक—

सार्वभौस संस्कृत प्रचार कार्यास्त्रय डो॰ ३८/११० हीजकटोश वाराणसी ।